AYURVED KI RUP RAKHA
VE ANUBHUT PRYOG G.K.V.

आयुर्वेद की रूप रेखा

व

अनुभूत प्रयोग

★ ★ ★

योगी फार्मेसी, लकसर रोड
P. O. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

एक निवेदन:-

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं ना पुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ।।

कुछ पवित्र उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हमने वनोषधियों के भण्डार हिमालय की उपत्यका हरिद्वार में उत्तम औषधियों के निर्माण की योजना **योगी फार्मेसी** के रूप में १९६० में प्रारम्भ की जिसको ख्याति प्राप्त चिकित्सकों, सन्त महात्माओं एवं विशिष्ट व्यक्तियों का मार्ग दर्शन और सहयोग प्राप्त होता आ रहा है ।

विगत वर्षों में जो ख्याति, विश्वास एवं आत्मीयता हमको मिली है वह इस आर्थिक होड़ के युग में भी निरन्तर प्रगति पथ पर चलने के लिए विशेष रूप से सहायक हुई तथा हमें उत्तमोत्तम औषधि निर्माण के लिए प्रोत्साहन मिला है ।

फार्मेसी का संचालन एवं निर्माण कार्य संस्थापक ख्याति प्राप्त आस्थावान् रसायनाचार्य प्राणाचार्य कविराज वैद्य विजय शास्त्री आयुर्वेदाचार्य बी० ए० एम० एस० के व्यक्तिगत निरीक्षण में होता है ।

धर्मार्थ चिकित्सा विभाग- फार्मेसी अपनी आय के एक बडे भाग को निःशुल्क चिकित्सा एवं रोगियों को दूध आदि के रूप में व्यय करती है।

अनुसंधान विभाग- फार्मेसी ने प्राचीन ग्रन्थो की मौलिकता को संजोए रखते हुए उन औषधियों को आज के अनुरूप ढालने का प्रयास किया है । जिससे अपने देश में ही नहीं विदेशों से भी उनकी बड़ी मांग आ रही है ।

आशा है चिकित्सक बन्धु हमारे इस प्रयास का पूरा-पूरा लाभ उठायेंगे और हमें सेवा का अवसर देते रहेंगे ।

व्यवस्थापक

आयुर्वेद की रूपरेखा

OUTLINE OF AYURVEDA

भारतीय दर्शन शास्त्र सत्व, रजस्, तमस् इन तीन मूलतत्वों को जगत् का कारण मानता है। आयुर्वेद उनके स्थान पर पित्त, वायु और कफ को उनके प्रतिनिधि रुप में शरीर का कारण मानता है। शरीर में होने वाले सर्व भौतिक और रासायनिक परिवर्तनों का अर्थात् सारे 'मेटाबोलिज्म' का कारण इन्हीं को कहता है । मूलरुप में इनको वह अप्रत्यक्ष मानता है। यद्यपि इनके प्राकृतिक तथा वैकृतिक परिणामों को जो प्रत्यक्ष होते हैं वह पित्त, वायु या कफ नाम से भी पुकारता है। जब ये स्वास्थ्य का कारण होते हैं वह इन्हें धातु कहता है, जब ये रोग का कारण होते हैं, वह इन्हें दोष कहता है।

इनमें से उस तत्व को जो ऐच्छिक अनैच्छिक सर्व चेष्टाओं का कारण है 'वा' गतौ धातु से 'वायु' कहा जाता है। चरक ने कहा है 'सर्वा हि चेष्टा वातेन'। चरक ने कहा 'वायुरायु:' अर्थात् शरीर का वायु ही आयु है। लैटिन के 'विटा' शब्द का अर्थ आयु होता है। वायु को जो 'वात' कहा जाता है उसी का अपभ्रंश 'विटा' शब्द प्रतीत होता है। चरक ने कहा 'आयुषोऽनुवृत्ति प्रत्ययभूतो वातः' शरीर में जो आयु का प्रत्यायक तत्व हैं वह वात है। वायु को अन्यत्र विद्युत तत्व भी कहा है। चरक ने भी कहा है 'वायुस्तन्त्र यन्त्र धरः' अर्थात् इस शरीर रुपी यन्त्र का संचालक तत्व वायु है।

प्राणवायु— मस्तिक गत उस वायु को जो इन्द्रियों द्वारा रूप, रस, स्पर्श, गन्ध, शब्दादि विषयों को ग्रहण करता है, चिन्तन, मनन, ऊहापोह, निर्धारण आदि कार्य करता है, आहार पान को (Vagal centre द्वारा) निगलने, श्वास प्रश्वास लेने का (Reticular formation में विद्यमान Respiratory centre द्वारा) का कार्य करता है उसे प्राण वायु कहते हैं। वाग्भट ने कहा है 'बुद्धि हृदयेन्द्रिय चित्त धृक् प्राणः' तथा कहा है 'प्राणोऽत्र मूर्धनि' शार्ङ्गधर ने कहा है 'हृदि (मस्तिष्के) प्राणः'।

उदानवायु— कण्ठगत उस वायु को जो भाषण और शारीरिक यत्न (Effort) के समय काम आता है उदान वायु कहते है। वाग्भट ने कहा है 'वाक्प्रवृति प्रयत्नोर्जाबलवर्ण स्मृति क्रियः' (Vagus स्थितवायु Recurrent Laryngeal Nerve द्वारा यह कार्य करता है)।

समानवायु—पाचन स्थान में स्थित उस वायु को जो पाचक रसों को प्रवृत करता है समान वायु कहा है (Vagus के द्वारा समान वायु की क्रिया संपन्न होती है) वाग्भट ने कहा है 'समानोऽग्नि समीपस्थः कोष्ठे चरति सर्वतः । अन्नं गृह्णाति पचति विवेचयति मुञ्चति'।

अपानवायु— वास्तिस्थान Pelvis में स्थित उस वायु को जो मल मूत्र गर्भ आदि को प्रवृत्त करता है अपानवायु कहते हैं। (दूसरे तीसरे Sacral Vertebrae से निकली Pelvic Nerves या Nervi erigentes के द्वारा आये Parasympathetic सूत्रों द्वारा यह वायु वस्तिगत मूत्राशय मलाशय आदि के मांस को Contract करता तथा तथा इन आशयों के Sphincters को शिथिल करता है

एवं इन्हें मलमूत्र गर्भ आदि से खाली कर देता है। इस वायु का केन्द्र स्थान Lumbosacral Spinal Cord में ही है)।

व्यानवायु— मस्तिष्क के Hypothalamrs प्रदेश में स्थित Autonomic Nervous System के संचालक उस वायु को जो, रुधिर, लिम्फ या लसी का आदि के संचार का कारण है तथा जो ऐच्छिक अनैच्छिक दोनों मांस तेशियों में होने वाली चेष्टाओं के उत्पन्न करने का कार्य करता है उसे व्यान वायु कहते हैं। वाग्भट ने कहा है 'व्यानो हृदि (मस्तिष्के) स्थितः कृत्स्नदेहचारी महाजवः गत्यपक्षेपणोत्क्षेप निमेषोन्मेषणादिकाः। प्रायः सर्वाः क्रिया स्तस्मिन् प्रतिबद्धाः शरीरिणाम्" अर्थात् व्यान मस्तिष्कमें स्थित वह वायु है जिसके द्वारा शरीर व्यापी सर्वचेष्टायें संपन्न होती हैं। चेष्टावाही नाडियों द्वारा यह सर्वक्रियाओं का सपादन करता है।

वायु के स्थान के विषय में यह कहना है कि प्रत्येक 'सेल' में यह कार्य कर रहा है तो भी नाडीमण्डल Nervous System को इसका प्रधान स्थान कहा जाता है।

इस वायुतत्व का पोषण बलप्रद आहारों से विश्राम तथा निद्रा से, मानसिक शान्ति से, मानसिक प्रसन्नता से होता है। आहार में भी फलों तथा कच्ची सब्जियों में विद्यमान विटामिनों के द्वारा इसे विशेष बल मिलता है। शरीर में अग्नि कर्म ठीक हो तो उससे भी वायुतत्व को बल मिलता है। इस वायुतत्व के सम अवस्था में रहने से शरीर स्वस्थ रहता, आयुदीर्घ होती है।

अब यदि उचित आहार न मिले या शरीर में कोई चिरस्थायी रोग घर कर जाये, या शरीर पर कोई भारी चोट लग जाये, या मन पर धनहानि पदहानि, का आघात आ पडे या आदमी की आदत

क्रोध करने, कलह करने की हो या चिन्ता भय आदि का कोई कारण उपस्थित हो जाये, या आदमी हर समय किसी प्रकार के तनाव की अवस्था में रहे, या वह तमाखू, मद्य, भांग, केफीन आदि किसी मादक द्रव्य का सेवन अतिमात्रा में करने लगे, या मधुमेह के कारण शरीर से ग्लूकोज अधिक निकलने लगे, या रक्त में यूरिया, यूरिक एसिड, वसामय तत्व अधिक मात्रा में संचित हो जायें या कोई जीवाणु विष शरीर में चिरकाल तक कायम रहे तो शरीर का यह वायुतत्व निर्बल हो जाता है जिससे शरीर तथा मन की कार्य शक्ति, क्षमता, सामर्थ्य कम होती जाती है।

शरीर के इस जीवनीतत्व, वायुतत्व या प्राणतत्व की मन्दता से जो रोग उत्पन्न होते हैं उन्हें वायुरोग कहा जाता है। इस अवस्था का प्रधान लक्षण शारीरिक तथा मानसिक 'चलता' या 'विक्षोभ शीलता' का होता है। ऐसे व्यक्ति के शरीर तथा मन में स्थिरता के स्थान 'चलता' का लक्षण उत्पन्न हो जाता है। इसलिये वायु जब दोष रूप होता है उसे 'चल' भी कहा जाता है। जिस अंग या अवयव में दोष रूप वायु बढ़ता है उसमें स्नायुतन्तु (कनेक्टिव टिशू) अधिक बढ़ जाता है (जिससे उसमें रूक्षता का लक्षण भी हो जाता है इसीसे वायु को 'रूक्ष' कहा जाता है। जिस अंग में वायु की क्षीणता होती है उसके बनाने वाले सेलों की संख्या न्यून हो जाती है जिससे उस अग में 'लघुता' का लक्षण उत्पन्न हो जाता है इसीसे वायुको 'लघु' भी कहा जाता है। जिस अंग में उसका वायुतत्व क्षीण हो जाता है उसका रक्त द्वारा पोषण कम हो जाता है जिससे उसकी उष्णता या तापमान नार्मल से कुछ कम हो जाता है इसीसे वायु को 'शीत' कहा जाता है। जिस अंग या अवयव में वायु तत्व क्षीण होता है अर्थात् जिसमें जीवनीय तत्व निर्बल होता है वहां कैल्सियम विशेष बैठने लगता है जिससे वह स्थान कुछ कठिन या 'खर' हो जाता है इसीलिये वायु को 'खर' भी कहा है। जिस अंग का रक्त द्वारा पोषण कम होता है उसमें कुछ बड़े सूक्ष्म से लक्षण जैसे दर्द,

बेचैनी चीटियों के रेंगने की सी प्रतीति, चमचमाहट आदि लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं इसलिये आयुर्वेद में वायु को 'सूक्ष्म' भी कहा है। जैसे वाग्भट ने कहा है तत्र रूक्षो, लघु:, शीत:, खर: सूक्ष्म, श्चलोऽनिल: ये सर्व लक्षण वायुविकृतिके सूचक होते हैं।

इस प्रकार शरीर में जहाँ कहीं भी चलता, विक्षोभशीलता, वेदना आदि के लक्षण होते हैं, उन सबको वायु रोग कहा जाता है। शरीर में होने वाले ये वायु रोग अनेकानेक हैं। इनकी चिकित्सा सामान्य है एक तो शरीर के पोषण को बढ़ाया जाये, शरीर को पोषक तत्त्व प्रोटीन वाले भोजन विशेष दिये जायें, खाद्य तेल भी दिये जायें। तेल की मालिश की जाये नासिका कान सिर पैर आदि पर तेल का प्रयोग किया जाये। रोगी को विश्राम दिया जाये उसकी निद्रा को भी बढ़ाया जाये। यदि वह तम्बाखू मद्य आदि विष द्रव्य का सेवन करता हो तो उसे बन्द किया जाये। उसके शरीर में कोई चिररोग हो मधुमेह हो तो उसकी पूरी-पूरी चिकित्सा की जाये, चिर अति सार, गौट आदि हो तो उसके निवारण का उपाय किया जाये। उसे सदा प्रसन्न और शान्त रखने का उपाय किया जाये तो वायु रोगों को शान्त किया जा सकता है। जो-जो औषधियाँ बलवर्धक, पोषक, चित्तशामक हैं वे सब वायु रोगों के लिये हितकर हैं। उदाहरणतः—वृहत् वात चिन्तामणि, वसन्त कुसुमाकर, चिन्तामणि-चतुर्मुख, महालक्ष्मी विलास, द्राक्षारिष्ट, दशमूलारिष्ट, अश्वगंधारिष्ट, महायोगराज गुग्गुलु, शतावरी घृत, लशुनाष्टक चूर्ण, चन्द्रप्रभा वटी, योगेन्द्र रस, अश्वगन्धा चूर्ण, अजमोदादि चूर्ण आदि सब वायु रोग नाशक हैं।

शरीर का दूसरा मूलतत्त्व देहाग्नि या पित्ततत्त्व है। शरीर-

व्यापी आहार पाक, धातु पाक, मल पाक के मूल कारणभूततत्त्व को देहाग्नि या पित्ततत्त्व कहते हैं। इसी अग्नि के कारण शरीर के सेलों में सहस्रों पाचक रस (Enzymes) उत्पन्न होते हैं जो शरीर में होने वाले 'मेटाबोलिज्म' शरीर व्यापी पचन प्रक्रिया का संचालन करते है। इन पाचक रसों द्वारा आहार द्रव्य साधारण द्रव्यों में परिवर्तित हो जाते हैं। फिर उन साधारण द्रव्यों के परस्पर मिलने से शरीर के अनेकानेक धातु उत्पन्न होते हैं। फिर इन धातुओं का पाचक रसों द्वारा पाक होकर मल उत्पन्न होते है; और फिर ये मल भी पाचक रसों द्वारा साधारण द्रव्यों में परिवर्तित कर दिये जाते हैं; जो फिर श्वास, स्वेद मल मूत्र द्वारा शरीर से निकाल दिये जाते हैं। इस प्रकार देहाग्नि शरीर को स्वस्थ, स्वच्छ और सुन्दर बनाये रखती है।

इस देहाग्नि के पचन कर्म से उत्पन्न ऊष्मा के कारण शरीर गर्म रहता है तथा इसके रासायनिक कर्म से उत्पन्न शक्ति (Energy) के द्वारा शरीर के वायुतत्व को बल मिलता है।

यह देहाग्नि ठीक अवस्था में रहे तो शरीर की ऊष्मा ठीक रहती है, भूख प्यास ठीक लगती है, त्वचा की कान्ति बनी रहती है। नेत्रों की दृष्टि ठीक रहती है। रक्त स्वच्छ रहता है। मस्तिष्क में हर्ष, प्रसाद और शूरता के भाव रहते हैं, बुद्धि निर्मल रहती है।

देहाग्नि का जो अंश अन्न पाचन का कार्य करता है, जिसे जाठराग्नि कहते हैं, उसे अन्न पाचक अग्नि कहा जाता है, आमाशय, पक्वाशय इसका स्थान हैं। जो अग्नि यकृत आदि में रह कर (Anti anaemic factors द्वारा) रक्त मज्जा में बनने वाले रक्त कणों Erythrocytes का रंजन करती है उसे रञ्जक अग्नि कहा है जो अग्नि Retina नेत्र पश्चिम पटल में रहकर रूप दर्शन सम्बन्धी रासायनिक परिवर्तनों

(Photo chemical reactions) का कारण होती है उसे आलोचक अग्नि कहा है। मस्तिष्क मे जिस रासायनिक प्रक्रिया से अर्थात् नाना प्रकार के Enzynes के द्वारा वहां Serotonin, adrenaline Nor-adrenaline आदि Hormones उत्पन्न होते हैं और जिनसे मानसिक विचारों पर प्रभाव पड़ता है उसे विचार साधक पित्त कहते हैं। त्वचा में विद्यमान जिस अग्नि के द्वारा त्वचागत द्रव्य विलीन होते हैं तथा जिस अग्नि द्वारा त्वचा पर स्वाभाविक कान्ति बनी रहती है उसे भ्राजक अग्नि कहा है।

यह देहाग्नि सम अवस्था में रहे इसके लिये आवश्यक है कि आहार सुपच हो गुरुतर न हो, मात्रा में स्वल्प हो, न अतिशीत न अति-उष्ण हो, न अतिस्निग्ध हो तथा रोज के नियत समय पर लिया जाये। देहाग्नि को प्रवल रखने के लिये प्रतिदिन कुछ शारीरिक श्रम करना या कुछ शारीरिक व्यायाम लेना भी आवश्यक है। काम क्रोध, शोक, चिन्ता आदि आवेशों से बचकर सदा शान्त और प्रसन्न रहने से भी देहाग्नि सम अवस्था में रहती है।

पित्त रोग—जब शरीर का कोई अवयव क्षत हो जाता है या मृत हो जाता है तो उसके पाचन अर्थात् उसके द्रवीकरण (Liquefaction) के लिये देहाग्नि प्रवल हो जाती है। अवयवों के क्षत विक्षत होने का सबसे बड़ा बडा कारण जीवाणुसंक्रमण होता है। ऐसी अवस्था में जब देहाग्नि बढ़ रही हो तो ज्वर, दाह, पिपासा, स्वेद, पाण्डुता आदि लक्षण होते हैं। यह देहाग्नि की वृद्धि जहां मृत अवयव के पाचन के लिये होती है वहां आगन्तु जीवाणु के विनाशक द्रव्यों Antibodies जैसे Anti Toxins, Precipitins, Opsonins, Agglutinins, Lysins आदि) के उत्पन्न का भी काम करती है। फिर जब पित्ताग्नि द्वारा जीवाणु विष नष्ट हो जाते हैं ज्वर शान्त हो जाता है अर्थात् पित्ताग्नि

शान्त हो जाती है। इस प्रकार पित्ताग्नि, ज्वर द्वारा शरीर की रक्षा का कार्य करती है।

पित्त रोगों की चिकित्सा:—पित्त रोग या ज्वर रोगी को पूर्ण विश्राम मिलना चाहिये और उसे लघु सुपच आहार भी मिलना चाहिये ताकि शरीर की शक्ति बनी रहे और वह जीवाणु नाशक द्रव्यों को प्रभूत मात्रा में उत्पन्न कर सके। औषध भी उसे शक्ति वर्धक ही मिलनी चाहिये तथा मल स्वेद मूत्र आदि को निकालने वाली कुछ औषध भी उसे मिलनी चाहिये। शरीर की अपनी शक्ति द्वारा जीवाणु नाश होना अधिक उचित है अपेक्षा इसके कि सीधी जीवाणु नाशक औषध बाहर से दी जाये।

पित्त शामक द्रव्य—आंवला, नीम, वासा, शतावरी, मुलहटी, कुटकी, चन्दन उशीर, घृत, दूर्वा, धनिया आदि हैं।

शरीर का तीसरा मूलतत्व कफतत्व—

उपर्युक्त चेष्ठातत्त्व, तथा अग्नितत्व के अतिरिक्त एक तीसरा वृद्धितत्त्व भी है जिसके कारण शरीर में वृद्धि, रोहण, रोपण, रक्षण आदि कर्म संपन्न होते हैं। शरीर में जब कोई क्षत लगता है तुरन्त वहां रोपण कर्म आरंभ हो जाता है। यदि शरीर में कोई वाह्य जीवाणु विष प्रवेश करता है तुरन्त वहां भी रक्षण कर्म आरम्भ हो जाता है।

कफतत्त्व के कारण ही शरीर और मष्तिष्क दोनों का उचित विकास होता है। कफतत्त्व के कारण ही शरीरी सुडौल, स्वस्थ एव परिपुष्ट होता है, मस्तिष्क में बुद्धि स्मृति धृति आदि का विकास होता है। मन मे उत्साह का उदय होता है। ज्ञान शक्ति का विकास होता है मनुष्य में सहन शक्ति और धीरता, स्थिरता आदि गुणों का उदय होता है। शरीर में भी जो दृढता, स्थिरता, स्निग्धता, चिकनाहट, गुरुता आदि के गुण हैं।

वे इसी तत्त्व के कारण हैं।

मुख जिह्वा आदि में जिस तत्त्व के कारण रस का बोधन होता है उसे रस बोधक श्लेष्मा कहते हैं। आमाशय में विद्यमान उस श्लेष्मा को जो खाये हुए अन्न का क्लेदन, द्रवीकरण करता है उसे क्लेदक श्लेष्मा कहते हैं। पुफुस में वायु के होने पर भी वहां जो क्लेद का भाव विशेष रहता है उसे अवलम्बक श्लेष्मा कहते हैं। संधियों के अन्दर कण्डराओं के चारों ओर संधियों की थैलियों (Bursa) में जो चिकना द्रव रहता है उसे संधि श्लेषक श्लेष्मा कहते हैं। मस्तिष्क के अन्दर विद्यमान स्नेहन, रक्षण आदि कार्य करने वाले मस्तिष्क द्रव (Cerebrospinal fluid) को इन्द्रिय तर्पक श्लेष्मा कहते हैं।

इस कफतत्त्व का पोषण; तर्पण गुण आहार से, विश्राम से, निद्रा से, निश्चिन्तता, प्रसन्नता, ब्रह्मचर्य आदि द्वारा होता है।

कफकर्म और पित्तकर्म का सन्तुलन मनुष्य को स्वस्थ रखता है:—

कफतत्त्व, आहार से प्राप्त 'कैलोरीज' द्वारा शारीरिक धातुओं का निर्माण करता है। पित्ततत्त्व इन 'कैलोरीज' को खर्च करता है। इनमें से पहला आमदनी करता दूसरा खर्च करता है, इस प्रकार कफ और पित्त एक दूसरे के विपरीत कार्य करते हैं। इन दोनों के सन्तुलित रूप में रहने से शरीर स्वस्थ रहता है। यदि शरीर में व्यय अधिक हो आय कम हो तो उसे पित्त वृद्धि की अवस्था कहते हैं। ज्वरों में ऐसा ही होता है। दूसरी ओर यदि आय अधिक और व्यय कम हो अर्थात् कफ-कर्म अधिक और पित्त कर्म मन्द हो तो उसे कफवृद्धि की अवस्था कहते हैं। कफवृद्धि की अवस्था वास्तव में अग्नि की या पित्त की मन्दता की अवस्था ही है। अतः कफवृद्धि की अवस्था को पित्त की

मन्दता की अवस्था कहना अधिक उचित रहता है।

इस प्रकार यदि आहार तो गुरुस्निग्ध गुण किया जाये और शारीरिक श्रम या व्यायाम न किया जाये तो आहार का कुछ अंश शरीर में जो खर्च नहीं हो पाया वह 'आमद्रव्य' के रूप में शरीर में संचित हो जाता है। वह फिर चर्बी या वसा के रूप में शरीर में जमा हो जाता है। रक्त में भी Free fatty, acids Triglycerides, Cholesterol, Phospholipids आदि स्निग्ध द्रव्य अधिक संचित हो जाते हैं। इस अवस्था को जब शरीर में कैलोरीज़ की आय अधिक हो व्यय कम हो कफ दोष की वृद्धि की अवस्था कहते हैं। इस अवस्था को सर्व रोगों का कारण कहा है आयुर्वेद में कहा है 'व्याधिना माश्रयो ह्येष आमसंज्ञोऽतिदारूण:'। देखा जाये तो ५०-६०% रोग कफवृद्धि के कारण, दूसरे शब्दों में अग्नि की मन्दता के कारण होते हैं। चरक ने कहा है 'अग्नि दोषान्मनुष्याणां रोग संघाः पृथग्विधाः' अर्थात् अधिकतर रोग अग्नि दोष से होते हैं। वाग्भट ने इसी बात का पोषण किया है 'वाग्भटस्य प्रतिज्ञेयं न मन्दाग्नि विना रुजः' चिकित्सा का उद्देश्य क्या है इसका उत्तर देते हुए आयुर्वेद ने कहा है "सारमेतच्चिकित्सायाः परमग्नेश्चपालनम्" अर्थात् अग्नि की रक्षा करना ही चिकित्सा का सार है यह बात सत्य भी प्रतीत होती है कि अग्नि की मन्दता ही बहुत से रोगों का कारण होती है उदाहरणतः वृद्धि, मधुमेह, हृदय शूल, हार्ट-अटैक, आमवात, गठिया, अश्मरी, अलर्जी, ब्लडप्रेसर, नाना त्वग्रोग, रसौली आदि अग्नि की मन्दता के परिणाम रूप में होते हैं। शेष ४०% रोगों में से २५-३०% रोग वायुतत्त्व की मन्दता से होते हैं अर्थात् वायु रोग होते हैं तथा १५% के लगभग रोग पित्त की या अग्नि की प्रवलता से होते हैं अर्थात् पित्तरोग होते हैं।

अग्नि की मन्दता से होने वाले रोगों से बचने के लिये कुछ

काल पूर्ण या अर्ध लंघन करना चाहिये, आहार लघु, रूक्ष तथा उष्ण-गुण होना चाहिये, चिकनाई तथा खाण्ड का सेवन न करना चाहिये, कुछ शारीरिक श्रम या व्यायाम करना चाहिये, स्वेदन करना चाहिये, लघुविरेचन लेना चाहिये। कफ शामक औषधियों में आर्द्रक, मधु, गोमूत्र, त्रिकटु, पंचकोल, त्रिफला, भास्कर लवण, हिंग्वष्टक, व्योषादि वटी, संजीवनी वटी, आरोग्य वर्धनी वटी, कफकेतु, लवंगचतु:सम, निम्बादि-चूर्ण, रामबाण रस, शिलाजीत, मञ्जिष्टादि क्वाथ, चित्रक हरीतकी, दशमूल हरीतकी आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रकृति भी आयुर्वेद में तीन प्रकार की है यदि जन्म से ही प्राणतत्त्व या जीवनीयतत्त्व या वाततत्त्व निर्बल हो मन्द हो तो उसे वात प्रकृति (Asthenic Tempererment) कहते हैं। जन्म से अग्नितत्व की प्रबलता हो तो उसे पित्त प्रकृति कहते हैं। यदि जन्म से अग्नितत्त्व की निर्बलता हो तो ऐसे व्यक्तिको श्लैष्मिक (Phlegmatic) प्रकृति का कहते हैं।

=◎=

रोगों की संक्षिप्त चिकित्सा

अग्निजम्मा- (१) निम्बपत्ररस यादूर्वास्वरस ४ गुणा से पकाया तेल (२) या तेल १ सेर में ५ तोला जीरा, जल एक सेर मिला तेल बनायें फिर उसमें २॥ तोला सिन्दूर मिलायें इसे लगायें । रोग पुराना हो तो तेल १ सेर में श्वेत कनेर के पत्तों का रस ३ सेर चित्र-मूल आधा पाव मिला तेल बनायें या सरसों के तेल आधा सेर में अर्क-पत्ररस २ सेर हल्दीकल्क १ छटांक मिला तेल साधन करें लगायें। आरोग्य वर्धनी २ गोली दिन में दो बार। पंचनिम्बखूर्ण दें। निम्बु का रस मलें। शोधा गोलियां, शोधालिक्विड तथा स्किनो प्रलेप (योगी)

अग्निदाह- केले या आलू को पीसकर लगायें बाधें (२) घृत में थोड़ी मोम तथा राल मिलायें कुछ मधु भी उसे लगायें (३) तिल तेल १० तोला में राल २॥ तोला सिन्दूर ६ माशा नीलाथोथा ४ रत्ती मिला के लगायें। (४) जात्यादि घृत लगायें। गोले के तेल में रतनजोत पौडर मिला के लगायें। स्किनो प्रलेप (योगी)

अपस्मार- सारस्वतचूर्ण १-२ माशा रोज (२) ब्राह्मीघृत (३) पेठे का सेवन (४) शतावरी पक्व दूध दें (५) किशमिश या अंगूर के कुछ दाने रोज लें। योगी रसायन (योगी)

अम्लपित्त- लीला विलासरस, सूतशेखर, आंवला, अवि-पत्तिकर चूर्ण, निम्बादि चूर्ण, गाजर का रस पिलायें। गैसान्तक (योगी)

अतिसार- पुराना हो तो बालबिल्व चूर्ण तथा ईसबगोल भूस्सी में योड़ा पिप्पली चूर्ण मिलाकर दिन में दो बार दें। रामबाण या संजीवनी वटी दें या अष्टकवटी दें। रसपर्पटी १ रत्ती से ६ रत्ती तक दें दूध रोटी का पथ्य दें)

अरूंषिका– Seborrhoea शिर की फुन्सियां :–निम्बुका(प्र या निम्बजल से धोयें (२) कुष्ठचूर्ण तेल में घिसकर लगायें (३) द्विहरिद्रादि तेल लगायें ।

अर्दित-लकुआ-- लशुनकल्क को मक्खन के साथ मिला के दें (२) एकांगवीर रस, विष मुष्टी वटी, रिनौन (योगी) महामाष तेल कान

अर्श-- (Piles) (१) अंजीर दो दानें नरम करके रोज लें (२) रसौंत मुसब्बर गुग्गुल बराबर मिला मूली के पानी से १० दिन मर्दन कर गोलियां बनायें २-४ रोज लें । (३) अर्शिना गोली (योगी) अर्शिना प्रलेप [योगी] (४) अभयारिष्ट (५) चन्द्रप्रभावटी । रक्तार्श में नागकेसर चूर्ण को मक्खन तथा खांड से दें या लोध्र, मोचरस, नीलोफर चन्दन समान समान के चूर्ण के साथ दूध दें, या आंवला लें । ईसवगोल भूस्सी

अलर्जी-- १- त्रिफलाचूर्ण २- हरीतकी आदि चूर्ण हरड १, सौंफ १/२, अजवायन १/३ भाग, नौसादर तथा नमक १/८ भाग ३- स्वर्णगैरिक २-४ रत्ती ३-४ वार ४- हरिद्राखण्ड ५- शोधावटी (योगी) रोगनाशक चूर्ण (योगी) चिरायता दोनों चन्दन पकाकर पिलाये

अश्मरी-- वृक्काश्मरी में १- गोखरु, कुलथी, वरुण की छालका काढ़ा दें २-गोक्षुरादि गुग्गुल दें, अंगूर देवें, जलन हो तो सरदाई दें । पित्ताश्मरी में १- गोमूत्र पक्व हरीतकी चूर्ण २- कुमार्यासव । बेर पत्थरभस्म । स्टोनौन (योगी) चन्द्रप्रभावटी भी दे

आमवात– १- रसोनकल्क वटी रसोन १, त्रिकटु, जीरा, हींग, अजवायन, सौवर्चल मिलित पांचवां भाग) दूध तथा खाण्ड अपथ्य हैं । २- हरीतक्यादि चूर्ण (अलर्जी में) ३- अजमोदादि चूर्ण ४- वैश्वानर

चूर्ण ५- महायोगराज गुग्गुल ६- सोंठ से पकाया दूध १- गर्म निम्बुजल ८- रिनौन (योगी) ९- एरण्डपाक । शक्ति विकास (योगी)

उरुस्तम्भ- १- दशमूलक्वाथ से चन्द्रप्रभा २- त्रिफला कटुकी चूर्ण ३- आरोग्यवर्द्धनी वटी ४- विटाप्लेक्स (योगी)

कर्णरोग-- दर्द में लशुनस्वरस कोसाकर के डालें हींग से गर्म किया तेल डालें, पूय हो तो जात्यादि तेल डालें । कर्णनाद कर्ण-वाधिर्य हो तो माष तेल, नारायण तेल, विल्व तेल डालें । चिन्तामणि रस देवें, अश्वगन्धा से पकाया दूध दें, वादाम १० दाने रोज दें । रिनौन (योगी)

कटिशूल- शुंठी चूर्ण, रसोनकल्क वटी, लशुनाष्टक, शुंठी गोक्षुरुक्वाथ, अजमोदादि चूर्ण । रिनौन (योगी)

कंठमाला-ग्रन्थियां- कांचनार गुग्गुल ।

कंपरोग- चतुर्भुजरस, रसराज, योगी रसायन (योगी)

कामला- गोमूत्रपीत हरीतकी दें । त्रिफला, दोनों हल्दी, कटुकी का चूर्ण दें, पन्चामृत लौहमण्डूर, निम्बुजल मीठा करके लें । लिवोसीन गोली तथा लिक्विड (योगी)

कास- बनफ्शा की चाय, पिप्पली सोंठ से साधित दूध, कफ-सीन गोली (योगी) बड़ों की खांसी में तालीशादि सम शर्करा लोह दें बालकों की खांसी में शृंगी धमासा अतीस मोचाका चूर्ण दें

कृमि- Roundworms के लिए पलाशबीज चूर्ण एक माशा दिन में ३ बार ३ दिन दें फिर विरेचन दें । Tapeworms के लिए कमीला १, विडंग २ भाग मिला इसकी २-३ ग्रांम की मात्रा रोज १ बार एक सप्ताह दें । Threadworms के लिए नीम के बीज १॥

तोला विडंग १ तोला पलाशबीज आधा तोला खुरासानी अजवायन आधा तोला मिला गोलियां बनायें। एक-एक गोली दिन में ३ बार कुछ दिन दें। Tapeworms के लिए लाल कद्दू के बीज २ औंस मिश्री २ औंस के साथ मिलाकर खिला दें व एक पाव जल पिला दें। दो घण्टे बाद एरण्ड तेल की एक मात्रा दें। रोग नाशक (योगी)

बालशोथ– लवंगादिवटी, खदिरादिवटी, आर्द्र कलवण कफसीन (योगी)

गृध्रसी-- अजमोदादिकूर्ण, रसोन कल्कवटी, एरण्ड तेल भर्जित हरीतकीचूर्ण, एकांगवीर, पांव में तेल की मालिश, समीर गजकेशरी रिनौन (योगी)

जलोदर-- पुनर्नवाष्टक क्वाथ, हरीतकीचूर्ण, पिप्पली साधित दूध, ऊंटनी का दूध, पुनर्नवा मण्डूर। लिवोसीन (योगी)

टान्सिलशोथ- दारुहल्दी नीम के क्वाथ में क्षार डाल के गरारे करें। गर्म जल में निम्बु रस डाल कर गरारे करें। आरोग्यवर्द्धनी दें। कफसीन (योगी)

त्वग्रोग-- पञ्चनिम्ब चूर्ण, आरोग्यवर्द्धनी। शोधा (योगी)

दन्तरोग– दन्तमांस शोथ में निम्बुरस को मधु में मिलाकर या मिम्बुजल के कुल्ले करें, निम्बुजल भोजन से पहले पी लें। रसौत को मधु में मिलाकर लगायें। दांत हिलता हो मौलसरी छाल या बीज का चूर्ण बना उसका मञ्जन करें। तिल के तेल में नमक तथा हल्दी मिला कर मलें। दन्तपूय रोग हो तो भी इसे मलें तथा दो सन्तरे रोज लेवें। अकरकरादि मंजन (योगी) दन्त शोधक (योगी)

निर्बलता– मकरध्वज वटी, शक्ति विकास (योगी) विटा फ्लैक्स (योगी)

नेत्ररोग-- त्रिफला चूर्ण घृत मधु से लें। महा त्रिफलाघृत। त्रिफलाक्वाथ पिलायें, त्रिफलाफाण्ट से धोयें। योगी रसायन (योगी)

प्रतिश्याय- दूध में बनप्शा पकाकर लें। व्योसादि चूर्ण लें। चिर प्रतिश्याय में चित्रक हरीतकी लें। लवणोदक से नाक धोयें। बादाम रोगन में चन्दन तेल मिला नाक में टपकायें। १-२ तोला मुनक्के थोड़ी काली मिरचों के साथ पीस लें १ पाव जल में पकायें १/३ रखकर छानकर पीलें, नये पुराने दोनों में। अत्रिफल कशनीज (योगी) कफसीन [योगी]

प्रदर-- अशोक की छाल से साधित दूध लें। शतावरी पक्व दूध लें, अशोकारिष्ट। इलायची के साथ केला लें। ल्यूकोप्लेक्स [योगी] प्रदर की सबसे बढ़िया दवा है।

पक्षाघात-- एकांगवीररस, रसराज, योगेन्द्ररस, दवालमुश्क [योगी]

पाण्डु-- पञ्चामृतलौहमण्डूर, नवायसलौह, लोहे की कड़ाही में पका दूध। लीवोसीन [योगी]

पेटदर्द-- हिंग्वष्टक, लशुनाष्टक, में से किसी को हरीतकी मिला के दें। हिंगु आदि चूर्ण [हींग १, कालानमक २, सोंठ ४, हरड़े ८ भाग] गैहान्तक [योगी] योगीधारा [योगी]

प्रोस्टेस्ट वृद्धि-- स्पीमन [हिमालय] ६ गोली दैनिक। शूगरोल [योगी] विटाप्लैक्स [योगी] गोखरु व शीलाजीत

फ्लू- कफकेतु, त्रिभुवन कीर्तिरस, योगी चाय तथा कफसीन [योगी]

बालरोग- अतिसार में बालचातुर्भद्र चूर्ण, लवंगचतुःसम

मधु से, खांसी में शृंग्यादिचूर्ण मधु से, बालघुट्टी [योगी] यकृत् वृद्धि में गोमूत्र दें। अमलतास, कुटकी, अतीस, गिलोय, मोथा का क्वाथ पिपली चूर्ण के साथ दें। लिवोसीन लिक्वड [योगी] अपस्मार रोग हो तो अंगूर के रस में मधु मिलाकर दें। (योगी बालामृत-- बल वर्धक व टानिक है)

बाहुपीड़ा-- अजमोदादिचूर्ण, एकांगवीर, शुंठीचूर्ण दूध से दें। रिनौन [योगी]

मधुमेह-- करेले का रस, बिल्वपत्रस्वरस २॥-२॥ तोला शूगरोल गोली [योगी]

मन्यास्तम्भ-- षड्बिन्दुतैल नस्य, नारायणतैल नस्य तथा मर्दन। सोंठ, उड़द, एरण्डमूल, कौंच का क्वाथ दें।

मलबन्ध-- त्रिफलाचूर्ण, ईसबगोलभूस्सी, गुलकन्द, मुनक्का १० दाने, या अंजीर दो दाने। रेचनीवटी [योगी] अत्रिफल जवानी

मस्से-- कांचनार गुग्गुल।

मानसरोग – ब्राह्मीघृत – ब्राह्मी रसायन

मुखशोथ-- दारुहल्दी का क्वाथ इससे कुल्ले करें। सुपारी मुख में रखें। नीम, पटोल, जामुन, चमेली के पत्तों का क्वाथ बना उसके कुल्ले करें। तस्कीनेकल्प [योगी]

मूर्छा-- मूर्छा हो जाती हो तो अश्वगंधारिष्ट देते रहें या खमीरा मरवारीद योगी देते रहें जवाहरमोहरा [योगी]

मुहासे-- लोध्र तथा चन्दन को दूध में घिसकर लगायें या जायफल और चन्दन को दूध में घिसकर लगायें। वेसन को निम्बुरस में गूंध कर मलें। सन्तरे के छिलके के पानी में तेल मिला मलें। चन्दन तेल निम्बुरस मिलाके लगायें। स्किनो प्रलेप (योगी)

स्नेहवृद्धि– मिम्बुजल में मधु डालकर पिलायें, त्रिफलाचूर्ण दें, आरोग्यवर्धनी, त्र्यूषणादिलोह ।। योगी शोधा

यकृत्‌रोग– पञ्चामृतलोहमण्डूर । लिवोसिन (योगी)
हरड़े चूर्ण में पिप्पली मिला के दें।

रक्तपित्त– वासारस से भावित हरीतकी चूर्ण दें, शतावरी से पकाया दूध दें, गुदा से स्राव हो तो मोचरस से पकाया दूध दें नाक से हो तो दूर्वा स्वरस या लाक्षारस का भरा फोया रखें, अनार के पत्त का स्वरस भी रोधक है । तस्कीनेकल्प (योगी) दूर्वास्वरस से ।

रक्तभारवृद्धि– गिलोय गोखरु का क्वाथ, आंवला, आमलकी रसायन । सर्पगन्धा घनवटी तथा योगी रसायन (योगी) रक्त-भार ह्रास में सेक्सोटैक्स (योगी)

वमन– स्वर्णगैरिक चूर्ण स्वल्पसा मधु से दें, हरीतकीचूर्ण मधु से दें, इलायची बीज, लौंग बराबर बराबर में मिश्री मिलाके शहद से चटायें । गैसान्तक तथा योगीधारा (योगी)

वृद्धावस्था– निर्बलता के लिए वृहत् वातचिन्तामणि, वसन्त कुसुमाकर, ब्राह्मी रसायन, आमलकी रसायन । योगी रसायन विटाप्लैक्स तथा शक्ति विकास (योगी) दर्द के लिए अजमोदादिचूर्ण या अश्वगन्धा विधारा समभाग चूर्ण खांड मिलाकर दें, या अश्वगन्धा विधारा सोंठ और सुरंजामीठीका चूर्ण दे । रिनौन (योगी)

वातरक्त (गठिया)– कैशोरगुग्गुलु, गुडूचीक्वाथ, रिनौन (योगी)

बालों के रोग– झड़ते हों तो बालछड़ आंवला और कुष्ठ के मिलित चूर्ण को थोडा सा दही में मिलाकर मलें, द्विहरिद्रा-

दितैल लगायें। केशला पौडर (यौगी)

शिरोभ्रम- शतावरी तथा द्राक्षा से पकाया गाय का दूध । योगी रसायन (योगी)

शिरःशूल- (Migraine) त्रिफलाचूर्ण, षड्बिंदुतैलनस्य- गोदन्तीभस्म १ माशा खोये में मिला के सूर्योदय से २ घन्टे पहले लें।

शुक्ररोग-, शुक्राणु ह्रास (Oligospermia) रोग के लिए स्पीमन २ गोली दिन में ३ बार रोज दें। वट के फलों को सुखाकर बराबर खाण्ड में मिलायें, ६ माशा दूध से रोज, या बसन्त कुसुमाकर दें। सफूफजरियान (योगी)

शुक्र सम्बन्धी नैर्बल्य में मुषलीपाक, मुषली १ किलो दूध ४किलो गाढ़ा करें, घृत १ किलो में भूनें, खाण्ड २ किलो शर्बत बना उसमें पकायें। गोखरु, तालमखाना, शतावरी, लौंग, आंवला, कौंच, जायफल, बादाम, पिस्ता, इलायची, चन्दन, चिरौंजी प्रत्येक १/१६ भाग मिलायें। सेक्सोटैक्स (योगी)। अति स्वप्नदोष में लसूड़े १०,१२ दाने रोज दें, या धनियां, आंवला, मिश्री बराबर२ मिलाके २ बार रोज दें, सफूफजरियान (योगी) शुक्र सम्बन्धी नैर्बल्य में स्पीमन ६ गोली दैनिक।

श्वासरोग- भोजन से पहले गर्म जल में निम्बु डालके पियें, समशर्करलोह २ माशा दिन में २ बार या दशमूलक्वाथ में पुष्करमूल चूर्ण डालके दें, अंगूर या किशमिश भी लाभ करते हैं।

श्वयथु- पुनर्नवाषृकक्वाथ।

श्वित्र- बावची बीजो को सात दिन सात बार गोमूत्र में भिगो सुखाकर चूर्ण करें, २-३ माशा रोज दे, सोमराजी घृत दें। बावची

१०, चित्रक, ४, हरताल २, कासीस २, त्रिफला २ तोला मिला भांगरे से मर्दन कर टिकिया बनालें इसे घिसकर लगायें। शोधावटी (योगी)

श्वेतप्रदर-- अशोकारिष्ट, पुष्यानुगचूर्ण, ल्यूकोप्लेक्स गोली (योगी) लोध्रचूर्ण, आंवला दें।

संधिवात-- गोडे आदि संधि में दर्द के लिए अश्वगन्धाचूर्ण दें, सोंठ से पकाया दूध दें। रिनौन (योगी)

स्मृतिनाश-- बादामपाक, बादामरोगन, ब्राह्मीघृत, योगी रसायन (योगी)

स्वरभंग-- कल्याणावलेह, आंवला चूर्ण दूध से। वाणी सम्बन्धी दोष के लिए भी यही दें। ब्राह्मीघृत भी दें,

सर्वांगशैत्य--(Colladse)कस्तूरीवटी(कस्तूरी१, चान्दीभस्म २, केसर ३, इलायची ४, जायफल ५, वंशलोचन ६, जावित्री ७ भाग) मधु से चटायें। सेक्सोटैक्स (योगी)

सर्पविष-- सिरस के फूलों के स्वास में श्वेतमरिच को सात दिन बदल बदल कर भिगोयें, सुखायें, चूर्ण करें, होश हो तो पिलायें बेहोश हो तो आंख में लगायें, नाक में डालें, या सिरस के फूल, फल, छाल को समभाग मिला कूट छानकर घी में डालें वह घी पिलायें।

हर्नियां-- हरड़ को कुछ दिन गोमूत्र में रख रखकर सुखाकर एरण्ड तेल में भून लें उसके चूर्ण में सैंधव मिला उसे लें, कभी-कभी एरण्ड तेल भी लें, या एरण्ड तेल को आटे में मिला उसकी एक रोटी लें।

हृदयरोग-- हृदयशूल में मृगश्रृंग भस्म घृत के साथ,

हृदय नैर्वल्य में खमीरा मरवारीद, अर्जुनक्षीर, नागार्जुनाभ्र, वृहत्वात चिन्तामणि, मुरव्वा आंवला, आमलकी रसायन, जवाहरमोहरा (योगी)

हिचकी– मयूरपिच्छा भस्म, पिप्पलीचूर्ण और मधु से दें, हरड़ या कुटकी का चूर्ण दें। स्वर्णगैरिक थोड़ा २ मधु से चटायें, हींग का धुआं दें, पिप्पलीचूर्ण गर्म जल से दें। स्वादिष्टचूर्ण (योगी) चटायें

हिस्टीरिया– जटामांसी, हींग, कपूर, अजवायन समान २ की गोंखियां दिन में ४-६ दें किशमिश रोज दें। ल्यूकोप्लेवस गोली (योगी)

अश्मरी– केसर थोड़ी २ घृत में १ बार ३ दिन तक लें पथरी निकल जाती है।

सिरदर्द– सौंठ दूध में घिस, उसका नस्य दें।

नासाकृमि– विडंग, हींग, सैंधा की गोली बनाके पान स्वरस में इसे घिस के नाक में बूंद डालें।

स्मृतिबुद्धि– ब्राह्मीघृत या ब्राह्मीचूर्ण १/२ मांशा घृत से

वृश्चिकविष– सैंधव को गर्म घी में मिलाके लगायें, गाय का दूध खाण्ड डालकर पिलायें, या जमालघोटे की गिरी पानी में पीसकर लगादें, या वत्सनाभ को पानी में पीसकर लगायें, पिपली तथा सिरस के बीजों को पीसकर जल या दूध में लगायें।

कफरोग में औषध को मधु से या गर्म जल से दें, वात रोग में गर्म दूध से या चाय से या तेल से दें, पित्त रोग में मक्खन, घी, मलाई या मिश्री से दें, गोलियों की मात्रा २, चूर्णों की मात्रा ३-६ ग्राम दिन में २ बार।

अर्शीना

बवासीर व भगन्दर की अकसीर आजमूदा दवा है यह बवासीर व भगन्दर जिन कारणों से होती है उनको दूर करती है। पुरानी कब्ज को भी दूर करती है। इससे दर्द व खून बन्द होकर मस्से नष्ट होते हैं। देश व विदेशों से काफी बड़ी मांग आ रही है।

अर्शीना पिल्ज

२ गोली नित्य प्रात: सायं गाय के दूध अथवा पानी से सेवन करें या चिकित्सक से सलाह करें।

अर्शीना प्रलेप

उंगली से अच्छी तरह दिन में २ बार मस्सों पर लगावें। इसे दाद, खाज, सभी प्रकार के एग्जीमा तथा मुहांसे (पिम्पलस) आदि त्वचा रोगो में भी तुरन्त आराम मिलता है।

आमलकी रसायन

आयुर्वेद में आमला सबसे अधिक बल, वीर्य वर्धक रसायन है, और यह इसका सबसे अच्छा प्रयोग है।

यह एक प्रकार आमले का सत ही है जिसे कि हरे पके आमलों के रस की आमला चूर्ण को १०१ भावना देकर इसे बनाया जाता है। इससे शरीर में विटामीन 'सी' कैलशियम तथा लोह धातु की कमी पूरी होती है। जलन दूर कर खूब भूख बढ़ती है व रोटी बढ़िया हजम होती है। जिगर पूरा खून बनाता है, जिससे दिल व दिमाग को शक्ति व ताजगी मिलती है। बच्चों, बूढों, जवानों, गर्भवती स्त्रियों सभी के लिए समान गुणकारी है।

कैशश्या पाउडर

बालों का गिरना, व अल्प समय में सफेद होना आज का एक

विशेष रोग है इहके लिए शताब्दियों पुराना यह आयुर्वेदिक प्रयोग बड़ा ही लाभकारी सिद्ध हुआ है।

इसमें आमला, शिकाकाई, भृंगराज, श्वेत गुन्जा, कपूर जैसी दिव्य औषधियों को लिया गया है। २ तोला चूर्ण को रात को पानी में भिगोकर प्रातः नहाने से पहले सिर पर मलकर स्नान करें, इससे कुछ ही दिन में बाल रेशम की तरह मुलायम, चमकदार और काले लम्बे व आकर्षक हो जाते हैं।

कफसीन

नई व पुरानी खांसी, नजला जुकाम व गले की खराबी की प्रसिद्ध घरेलु दवाई है, इसकी कुछ खुराकें ही पूरा आराम पहुंचाने के लिए काफी हैं, इसका बच्चों की काली खांसी, हिक्का व श्वास रोगों में भी सरलता पूर्वक प्रयोग किया जा सकता है, दमे व निमोनिया की पहली अवस्था भी दूर हो सकती है।

इसको दिन में तीन बार छोटे चम्मच (५ मि०ग्राम) दूध में डाल कर या वैसे ही चाट लेवें।

बालामृत

नन्हें मुन्ने बच्चों के लिए यह अमृत है। इसे बच्चे बड़े चाव से पीते हैं, व प्रसन्न हृष्ट पुष्ट बलवान व निरोग हो जाते हैं।

यह केसर, अतीस, मुनक्का, काकड़ासींगी, पीपल आदि अनेक आयुर्वेदिक दिव्य जड़ी बूटियों के सत निकाल कर बनाया जाता है, जिससे बच्चे के दांत निकालने सम्बन्धी सब रोग जैसे हरे पीले दस्त, उल्टी, सूखा रोग, कमजोरी, खून की कमी आदि दूर होते हैं, यह मां के दूध के समान निदोष व गुणकारी है। इसके सेवन से बच्चों का रंग सुन्दर व कद बढ़ता है, दांत आसानी से निकलते हैं।

प्रातः सायं एक-एक चम्मच गौ के दूध में मिलाकर, या वैसे ही चटावें अथवा चिकित्सक से सलाह लें ।

योगी चाय

ब्राह्मी, तुलसी, दालचीनी, गुलबनफ्शा, लौंग आदि हिमालय की ताजी जड़ी बूटियों के योग से इसे तैयार किया जाता है, जो कि चाय की तरह स्वाद व परम गुणकारी है, पर चाय की तरह शरीर को इसका अमल नहीं लग सकता और न ही यह नुकसान पहुंचा सकती है ।

यह शारीरिक शक्ति को बढ़ाकर आलस्य को दूर भगा काम करने के लिए सदा प्रोत्साहन देती है, इसके सेवन से खांसी, जुकाम, बुखार, सरदर्द नहीं होते अगर हों तो भी ठीक हो जाते हैं।

चाय की तरह १५ ग्राम चाय को एक लीटर पानी में उबाल कर दूध चीनी इच्छानुसार मिलाकर पीयें ।

वसंत कुसुमाकर रस

सौना, मोती, चांदी, केसर, कस्तूरी, अम्बर आदि दवाओं के योग से ऐटोमिक थ्योरी पर बनी यह आयुर्वेदिक, दवा वास्तव में बड़ा आश्चर्यजनक लाभ करती है। यह स्नायु, रंग पट्ठों में बल वीर्य का संचार करा अग प्रत्यंग में शक्ति व स्फूर्ति भर देती है, दिल व दिमाग की कार्य क्षमता को बढ़ाती है, पेशाब व रक्त में शक्कर (डाय-बटीज) की प्रभावशाली दवा है, इसके लगातार सेवन से निर्बल गृहस्थी भी सबल वं सामर्थ्यवान हो जाता है ।

एक-एक रत्ती प्रातः सायं मक्खन, मलाई या शहद में चाटें, खमीरा, मखारीद, अम्बरी ज्वाहरी, ३ माशा या एक मुरब्बे के आमले में मिला इसे सेवन करना ज्यादा फायदेमन्द है अथवा चिकित्सक से परामर्श लेवें।

ब्राह्मी आँवला तैल

दैनिक प्रयोग के लिए सर्वविदित 'योगी ब्राह्मी आमला तैल' ब्राह्मी, चन्दन, आमला आदि शीतल व मस्तिष्क के लिए बल वर्धक आयुर्वेदिक औषधियों को शुद्ध तिली के तैल में संस्कारित कर बनाया गया है। इसके सेवन से बाल नहीं झड़ते, मस्तिष्क ठंडा रहता है, सिर-दर्द गर्मी के कारण नकसीर रोकने आदि में भी लाभकारी है। इसकी भीनी २ मधुर सुगन्ध का अपना एक आकर्षण है। पूरे परिवार के लिए एक आदर्श कैश तैल है।

योगी रसायन (ब्राह्मी रसायन)

दिमागी काम करने वाले विद्वानों, वकीलों, डाक्टरों और विद्यार्थी व अध्यापकों ने हमारी इस भेंट को खूब सराहा है। यह मस्तिष्क को बल देकर स्मरण शक्ति को बढ़ाती है, दिमाग को तरो व ताजा रखती है, पूरी नींद लाकर चिंता, भ्रम, व हाई ब्लडप्रेशर को ठीक करती है, सन्यासी महात्माओं को सतोगुणी प्रवृत्ति प्रदान करने में सहायक है। जिससे वह समाधि ध्यान आदि में बैठ सकें। युवा अवस्था में विद्यार्थियों में पाये जाने वाले स्वप्न दोष आदि विकारों को दूर कर सारे शरीर व आत्मा को सबल बनाने के लिए ब्राह्मी व शंख पुष्पी के स्वरस हरे पके आमले, हरड़ तथा शुद्ध घृत आदि से बना यह रसायन एक दिन के बच्चे से लेकर १०० वर्ष तक के वृद्ध सभी के लिए समान उपयोगी है, एक बार परीक्षा करें।

१० ग्राम योगी रसायन, प्रातः सायं दूध के साथ लें अथवा चिकित्सक से सलाह लेवें। छोटे बालकों को आधी मात्रा देनी चाहिए।

च्यवनप्राश रसायन

जगत प्रसिद्ध यह आयुर्वेदिक रसायन अपने गुणों के कारण

ही घर २ में उपयोग किया जाता आ रहा है, हम इसे पूर्ण शास्त्रोक्त विधि से पक्के आमलों, शुद्धवंशलोचन, छोटी इलायची, दशमूल व दुर्लभ अष्टवर्ग शुद्ध मधु आदि-आदि द्वारा बनाते हैं। जो भी सज्जन च्यवनप्राश का सेवन कर निराश हो गये हों, उनको हमारा च्यवनप्राश रसायन अवश्य सेवन कर लाभ उठाना चाहिये।

यह वैसे तो सारे शरीर के लिए टानिक है पर श्वास प्रणाली (फेफड़े व गले) आदि रोगों यथा पुरानी खांसी, दमा, क्षय, को दूर कर अशक्तों को शक्ति, रोगियों को निरोग बनाता है, इसके लगातार सेवन से व्यक्ति कभी रोगी नहीं हो सकता, और प्रतिरोधक क्षमता पैदा होती है।

१० ग्राम च्यवनप्राश प्रातः सायं गाय अथवा बकरी के दूध के साथ लेवें या चिकित्सक से परामर्श करें।

दन्त शोधक

दालछीनी, माजूफल, रूमी मस्तगी, असली अकरकरा, नीम छाल, कपूर आदि बनस्पति के योग से बना हमारा यह मन्जन दांतों व मसूढ़ों से खून आना, दन्तशूल, दांतों में ठन्डा पानी लगना, दांतों का हिलना, तथा मुख से पस आने की चिकित्सा के लिए पूर्ण भरोसे की दवा है। इसके रोजाना प्रयोग से कभी भी मुख व दांतो का रोग नहीं हो सकता। दांत मोती के समान चमकदार व मुख से सारा दिन इसी की गन्ध आती है। भारत में ही नहीं फिजी, लंका, मारीशस व मलाया जैसे देशों में भी आज इसकी मांग है। घर में सभी परिवार वासियों के दांतों व मसूढ़ों की रक्षा के लिए शल्य चिकित्सक व समझदार गृहस्थी इसी की सिफारिश करते है।

प्रातः सायं ब्रुश अथवा अंगुली से दांतों व मसूढ़ों पर मलें, व

कुल्ला करें

गैसात्तक

पेट की तकलीफों में आराम पहुंचाने वाला हमारा गैसात्तक आपके घर का सच्चा वफादार सेवक व साथी है। इसे आप डाक्टर से कम कभी न समझें, क्योंकि यह पेट की तमाम गड़बड़ियों जैसे कब्ज, पेट का भारीपन, छाती में जलन, पेट दर्द, गैस के कारण दिल व दिमाग का भारीपन, जिगर की खराबी को दूर कर फौरन आराम देता है। इसके सेवन से किसी प्रकार का या कोई भी साईड इफैक्ट नहीं होता।

परोपकारी लोग गांव २ में इसे पास रखते हैं क्योंकि यह अनेक रोगों का एक इलाज है। १०० वर्ष से भी पुराना आज मूदा यह प्रयोग आप सबके घर में रहना ही चाहिए। जिसने भी एक बार इसका प्रयोग किया वही इसका मुक्त प्रशंसक बन गया है।

एक एक ग्राम दिन में २-३ बार अर्क सौंफ, फलरस अथवा पानी से लेवें ।

लिकोप्लेक्स

स्त्रियों के लिए सबसे बढ़िया ताकत की दवाओं की श्रेणी में लिकोंप्लेक्स सबसे आगे है क्योंकि यह गागर में सागर की तरह अशोंक, लोध्र, कीकर, बट, गूलर, शतावर, मूसली के परम सार धन तत्वों को निकालकर उसमें लोह, अभ्रक, बंग, चांदी व सूर्यतापी शिलाजीत मलाई आदि के योग से बनाई गयी है। इसके सेवन से स्त्रियों को घुन की तरह खा जाने वाला प्रदर या लिकोरिया जड़ मूल से नष्ट होता है, नया खून बनता है, भूख लगती है, कमर में दर्द, आंखों के आगे अंधेरा, थकावट आदि नहीं होते जिससे शरीर कान्तिमय, सुन्दर व बलवान बनता है। मासिक धर्म नियमित हो जाता है। जिन माताओं के बच्चे

नहीं होते उनको इसके सेवन से मनचाहा फल मिलता हैं। यदि स्वस्थ मातायें वर्ष में नियमित रूप से लेती रहें तो उनको शतायु प्राप्त हो सकती है :

२-२ गोली प्रातः सायं दूध से, फल स्वरस से लेवें। या चिकित्सक से सलाह लेवें।

शाही चूर्ण

स्वाद हाजमें के लिए "शाही चूर्ण" अपना विशेष स्थान रखता है इसके सेवन से भूख बढती है, गरिष्ट व भारी भोजन भी शीघ्र पचता है, पेटदर्द गैस व अन्य हाजमें सम्बन्धी खराबियां भी दूर होती हैं ।

उल्टी व जी मिचलाना, दूर होता है पहाड़ी व अन्य पानी आदि के कारण होने वाले कष्टों में भी लाभ पहुंचाता है।

घरों में स्त्रियां इसके अत्यन्त रोचक चटपटे स्वाद के कारण संभाल कर रखती हैं। और पानी में घोल कर जलजीरा बनाकर भी पीती हैं।

२-३ ग्राम दिन में २-२ बार इच्छानुसार लें।

रेचनी

कब्ज संसार की आधी बिमारियों क जड़ी है, और कब्ज से अकसर लोग परेशान रहते हैं क्योंकि कब्ज की दवाएं शरीर को कष्ट, व नुकसान देती हैं। पर यह मां के दूध के समान हानि रहित गोलियां हैं जिससे एक दिन के बच्चे से लेकर १०० वर्ष तक के मनुष्य को सदा दिया जा सकता है इससे किसी भी प्रकार की कमजोरी या कष्ट नहीं हो सकता, इसकी एक गोली के सेवन से आठ घंटे बाद एक टट्टी होती है और पेट साफ हो जाता है।

रात्री को सोते समय एक या दो गोली गर्म दूध अथवा पानी से लेवें अथवा चिकित्सक से परामर्श करें।

शोधा

उषवा, चोबचीनी, मजीठ, करंज अतीस, नीम आदि लगभग ४० परम रक्त शोधक जड़ी बूटियों का सत्व निकाल कर यह प्राकृतिक रक्त के शोधन के लिए बहुत ही प्रभावशाली दवा बनाई है जिसे परम सत्व तरल एवं गोली दोनों रूपों में उपस्थित किया गया है।

यह गन्दे खून को साफ कर मुहां से, दाद, खाज, एग्जीमा को जड़ से नष्ट करता है। रक्त को बढ़ाता है और शरीर के सौन्दर्य को निखारता है। कब्ज व अनावश्यक बढ़े हुए शरीर के वजन (मोटापे) को दूर करने की प्राकृतिक दवा है।

वर्षा ऋतु में इसे एक बार अवश्य सेवन करना चाहिये। इससे शरीर पूर्ण रूप से शुद्ध होता है, और आने वाले समय के लिये और मजबूत तथा त्वचा रूपवान व रोग रहित हो जाती है।

परम सत्व तरल दिन में २ बार एक-एक (१० एम० एल०) चम्मच गर्म पानी मिलाकर लें अथवा २-२ गोली दिन में तीन बार गर्म पानी से लेवें या चिकित्सक से परामर्श करें।

वीटाप्लैक्स

कस्तूरी, मकरध्वज, लौह, अभ्रक, बंग, सत शिलाजीत, गुग्गल, सत गिलोय आदि अनेक दवाओं के सत्वों को हिमालय की ताजी वनस्पतियों के सहयोग से यह एक ऐसा योग बनाया गया है जो कि शरीर भूख व काम करने से आयी हुई कमी को दूर कर तरो ताजा करती है। इससे शारीरिक भूख बढ़ती है, थकावट दूर होती है, आने वाले रोगों से शरीर को

वचाने के लिए प्रति रोधात्मक शक्ति (Imunitey) पैदा होती है। वीटाप्लेक्स के लिये एक कहावत चल रही है, "घर गृहस्थी का है बोझ इन पर, फिर भी रहते स्वस्थ चुस्त यह दिन भर"।

यह एक अच्छा टानिक हैं, शारीरिक बल, स्फूर्ति, काम करने की क्षमता को बढ़ाता हैं, मूत्र विकार को दूर करता हैं शूगर व प्रोस्टैट ग्रन्थी की वृद्धि के कारण बार-२ परेशान करना, कमर दर्द, पथरी, जिगर की खराबी आदि अनेक रोगों की अत्यन्त लाभकारी यह दवा हैं जिसे छोटे से छोटे बालक से लेकर वृद्ध सभी को दैनिक प्रयोग करना चाहिये इससे किसी भी प्रकार की हानि का बिलकुल भय नहीं हैं।

२-२ गोली प्रातः सायं दूध या योगी रसायन के साथ लें या चिकित्सक से सलाह करें ।

सैक्सोटैक्स

स्त्री तथा पुरुष दोनों ही जीवन साथियों को गृहस्थ के पूरे सुख, व ज्यादा आनन्द व तृप्ति के लिए यह वरदान है, यह किसी भी कारण से आई मानसिक व शारीरिक दोनों ही प्रकार की निर्बलता को तत्काल दूर कर सांसारिक सुख की ओर अग्रसर करने में समर्थ है। इससे आलस्य भागता है। चुस्ती व दाम्पत्य जीवन में आर्कषण जागता है यह नये दम्पतियों की पहली पसंद है।

इसमें किसी भी प्रकार की को कोई ऐसी औषध भी नहीं जो कि शरीर को हानि अथवा कष्ट पहुंचाये यह केशर कस्तूरी, अम्बर, मकरध्वज, मोती, सोना व चांदी आदि के योग से बना प्रथम श्रेणी का आयुर्वेदिक फार्मूला है।

रात्री को स्नेह मिलन से एक घंटा पहले एक से दो गोली दूध

से अथवा मलाई से लेवें या पान में रख कर खा जावें या चिकित्सक से सलाह लेवें।

सैक्सोटैक्स क्रीम

यह एक अनुभूत प्रयोग उन नौजवान भाईयों के लिए हैं, जिनको अपने आपको नौजवान कहते शर्म आती है। जो अपने बचपन अथवा विद्यार्थी काल में किन्हीं गलतियों के कारण (हस्त मैथुन, गुदा मैथुन) आदि द्वारा अपना सर्वनाश स्वयं कर चुके हैं, ऐसे हताश भाईयों को भरोसे के साथ इसके प्रयोग से स्थाई लाभ हो जाता है।

पुराने जोड़ों के दर्द, रग पट्ठों में आई दुर्बलता हाथ पैरों के कांपने व सूखने में भी इस क्रीम को तिल तैल में मिलाकर मालिश करने से लाभ होता हैं। न्युमोनियां व पसली चलने की अवस्था भी इसकी मालिश से लाभ होता है।

पुरुष दिन में एक बार थोड़ी सी क्रीम को इन्द्री पर मालिश कर ऊपर से पान का पत्ता गर्म कर बांध देवें। ध्यान रहे इसके प्रयोग काल के लग-भग एक सप्ताह में उस स्थान को गीला न करें, अथवा चिकित्सक से परामर्श लेवें।

लिवोसीन

अंगूर, हरे आमले, जामून, संतरा, अनार, व गाजर के रस में लौह सार, पुनर्नवा, मकोय, कुटकी कासनी आदि बनौषधियों के सत्वों का यह सबसे अच्छा संग्रह हैं।

जिगर के लिए आज के युग में सर्व प्रथम यह टानिक न केवल बच्चे बूढ़े या जवानों के लिए ही है बल्कि महिलाओं के गर्भ में पोषण प्राप्त करने वाले बच्चों को भी इससे पूरा लाभ होता है। यदि

गर्भावस्था में दुग्ध पान के दिनों में माता लगातार लिवोसीन लेती रहे तो बच्चे को कभी भूख की कमी या हाजमें की खराबी नहीं होती, उसकी हड्डीयां फौलाद के समान मजबूत तथा कद लम्बा होना स्वाभाविक ही है क्योंकि इसमें प्राकृतिक लोहा कैलशियम व फासफोरस जैसे तत्व, बड़ी मात्रा में भरे पड़े हैं। जो आपको फुर्तिला व उत्साह पूर्ण बनाते हैं इसके सेवन से भूख बढ़ती है शरीर में सब खाया पिया लगता है, नये लाल रक्त कणों का निर्माण होता है जिससे खून बढ़ता है और एक दम जवान व तन्दरुस्त दिखाई देने लगते हैं। बच्चों के साथ-२ महिलाओं को आयरन व कैलशियम की अधिक जरुरत होती है, उसे पूरा करने के लिए समझदार महिलाएं 'लिवोसीन' को अपना साथी बनातीं हैं क्योंकि इससे किसी तरह के नुकसान की गुंजायश नहीं यह सच्चे फलों के रस से बनाया गया है।

भोजनोपरान्त एक एक चम्मच लिवोसीन बराबर पानी मिला कर लेवें। छोटे बच्चों को आयु के अनुसार आधा या चौथाई चम्मच देवें या चिकित्सक से परामर्श करें।

योगी सुरमा

भारत में नेत्रों को निरोगी सुरक्षित व स्वच्छ बनाने के लिए आयुर्वेदिक सुरमों व अंजनों का प्रयोग प्रायः प्रत्येक वर्ग के परिवार में सदा होता है।

हमारा सुरमा शुद्ध सुरमें में गुलाब, पुनर्नवा, सीरष, केला, नीम, चाक्षुष, भृंगराज, भीमसेनी कपूर आदि औषधियों के स्वरसों की कई भावना देकर तैयार किया जाता है जिसके प्रयोग से नेत्रों को वल मिलता है नेत्रों की लाली जलन व खुजली दूर होती है, इसके लगातार प्रयोग से मोतिया होने का भय नहीं रहता व चश्मा तक उतर जाता है

नेत्रों के कारण सरदर्द व सिर का भारीपन दूर होता है।

सेवन विधि : रात्री को एक एक सलाई सूरमा सोते समय नेत्रों में लगा कर सोयें।

नोट : भारत में बड़े-२ सुरमे के विक्रेता हमसे बड़ी मात्रा में थोक खरीद कर छोटे पैकिंग में बिक्री करते हैं इसलिये हमने इसके १ किलो, ५ किलो व १० किलो के पैकिंग भी तैयार किये हैं। जोकि अत्यन्त अल्प मूल्य पर दिये जाते हैं।

शुद्ध शिलाजीत (मलाई)
सूर्यतापी

हम शिलाजीत पत्थर को बहुत बड़ी मात्रा में सीधा उसके उत्पत्ति स्थान से सग्रह कर विधिवत बड़ी ही मेहनत से शुद्ध करते हैं।

आयुर्वेद में शिलाजीत के अपार गुणों का वर्णन है, जो सज्जन किसी भी कारण शिलाजीत से निराश हो गये हों उनसे हमारा विशेष निवेदन है, वह इसे एक बार जरूर सेवन करें।

इसके खाने से सब प्रकार के दर्द, मोटापा, प्रमेह, मधुमेह, (डायबटीज) पथरी, गुर्दे की सूजन टूटी हुई हड्डी, खून की कमी व सब प्रकार की कमजोरियों की एक बहुत आजमूदा दवा है। इसको किसी भी चोट लगने पर सूजन व दर्द कम करने के लिए खून रोकने के लिए, कटे हुए और जले हुए हिस्से में शुद्ध घी में मिलाकर लगाने से तुरन्त आराम मिलता है।

१/४ ग्राम से १ ग्राम तक इसे एक चम्मच दूध में घोल कर

पिलावें या चिकित्सक से सलाह करें। चोट मोच आदि में घी में बराबर मात्रा में मिला कर गर्म-२ मालिश करें।

सत्त शिलाजीत सूखा

हम इसे बिल्कुल सूखा भी तैयार करते हैं जिसे कि एक चने के बराबर आप इस्तेमाल कर सकते हैं।

शिलाजीत वटी

इसी सूखी शिलाजीत की हमने गोलियाँ भी बना दी हैं। यह एक से दो गोली दिन में २-३ बार दूध या चाय से लेवें या चिकि-त्सक से परामर्श करें।

नोट : शुद्ध शिलाजीत हम बहुत बड़ी मात्रा में तैयार करते हैं, जिसे थोक बहुत ही कम मुनाफे पर फार्मेसियों और वैद्यों हकीमों को सप्लाई किया करते है। एक बार इसकी परीक्षा अवश्य करें।

अकरकरादि (चूर्ण)

दंत रोगों के इलाज में हमारे इस एक मंजन से चिकित्सकों को दंत रोगों की चिकित्सा में बड़ी आसानी हो गयी है।

इसमें पतंग, माजू, अकरकरा, सेंधा, शीतल चीनी, रूमी मस्तगी, कपूर, दालचीनी व लौंग जैसी कई जड़ी बूटियों को विशेष विधि से मिलाया गया है जिससे दाँतों के दर्द, हिलना व दांतों से खून पीप का आना फौरन बन्द होता है। मुख भी खुशबू से भर जाता है, यदि आपकी डाइट ठीक हो तो आप बहुत से रोगों से सदा मुक्त रह सकते हैं। और दांतों को ठीक रखने की यह बेजोड़ दवा है। इसे फार्मेसी लागत मूल्य पर ही केवल मात्र परोपकार की भावना से दे रही है, जिससे जनता में आयुर्वेद शास्त्र के प्रति आस्था और विश्वास

घर घर जागे।

इससे दन्त क्षय के इतिहास में निश्चय कमी आ रही है। हर समझदार परिवार इसे प्रयोग करने की आदत बना रहा है, जिस से उसका परिवार सुखी व निरोग रह सके।

प्रातः सायं एक - एक चम्मच मंजन अंगुली अथवा ब्रुश से करें व पानी से कुल्ले करें।

इसको छोटे ५० ग्राम व १०० ग्राम पैकिंग में व बड़े १ किलो पैकिंग में सप्लाई किया जाता है।

शर्बत दिल पसन्द

दिल व दिमाग को तरो ताजा रखने के लिए, गर्मी में लू व प्यास कों बुझाने के लिये असली फलों की सुगन्ध, फूलों के रस तथा जड़ी बूटियों के सार को आयुर्वेदिक वैज्ञानिक विधि द्वारा मिलाकर इसे बनाया गया है इसे सेवन करना गर्मी में थकावट के लिए सब से बड़ी रुकावट पैदा करना है, इससे दिमागी परेशानी, हाई ब्लडप्रेशर निद्रानाश आदि आदि रोग भी नष्ट होते हैं।

परिवार में आने वाले महमानों का अपनी संस्कृति व सभ्यता के अनुकूल आदर्श स्वागत के लिए अद्वितीय, स्वादिष्ट, रुचिकर व पौष्टिक रसायन है। एक गिलास पीने पर आप इसे कभी भुला नहीं सकते !

तस्कीनै कल्प

बच्चों को फूल की संज्ञा दी गयी है और फूल से कोमल बच्चों को पसन्द है उसकी प्राकृतिक के अनुकूल तस्कीनै कल्प, जो कि उनको दस्त, उल्टी, कै से बचा कर उनकी हड्डियों को मजबूत करता

है, उनकी शक्ति को बढ़ाता है, उनके रंग व रूप को निखारता है। उनके दांत ठीक समय पर बिना तकलीफ निकालता है। उनको हृष्ट, पुष्ट, कदश्रावर श्रौर दीर्घायु व बुद्धि देता है। उसका पेट ठीक करता है।

बच्चों के ही नहीं, बड़ों के भी हाई ब्लड प्रेशर, मुख पाक, चक्कर श्राना, जी घबराना, श्रादि पैत्तिक रोगों की उतम दवा है। जिनको लगातार नकसीर श्राती हो, उन्हें कुछ दिन के सेवन से ही सदा के लिए पूरा फायदा हो जाता है।

शक्ति विकास

यह प्राकृतिक लौह कैलशियम श्रौर जड़ी बूटीयों के सार विटामिनों का सार हैं, जिसे बालक, युवा, स्त्री, पुरुष सभी समान रूप से सदा सेवन कर सकते हैं। इसके सेवन से शारीरिक शक्ति का विकास होता है, यह दैनिक खर्च हुई शक्ति को पूरा करता है भूख को बढ़ाता है, थकावट को दूर कर सारे शरीर में नया खून पैदा कर चुस्ती, जवानी, बल व वीर्य का संचार करता है। पुरानी खाँसी, मानसिक दुर्बलता को शीघ्र दूर कर रग पट्ठों को मजबूत कर सारे शरीर का विकास करता है। जिन बालकों का कद छोटा होता है या वृद्धि रुक जाती है उनको इसके सेवन से काफी बड़ा लाभ होता है। सब प्रकार के जोड़ों के दर्द व श्रधरंग, लो ब्लड प्रेशर, का भी इलाज है।

एक एक चम्मच शक्ति विकास दोनों समय भोजनोपरान्त समान जल मिला कर लेवें, या चिकित्सक से सलाह करें।

सफूफ जरयान

जैसा दूध में मक्खन रहता है, वैसे ही शरीर का सार 'वीर्य'

रियनोन-

इसमें महायोराज गुग्लु, महारास्नाऽष्तक क्वाथ सुरजान व चोब चीनी आदि धन सत्वों को शुद्ध कुचला आदि के साथ मिलाया है जिससे सभी प्रकार के वायु के विकारों तथा जोड़ों के दर्द, गठिया, कमर दर्द मांसपेशी की दर्द ठीक होती है, लौब्लड प्रेशर को दूर करती है, उदरगत शूल, परिणाम शूल, गुल्म, फालिज, अधरंग आदि वायु विकारों में स्थाई लाभ होता है।

इससे दर्दों के साथ कब्ज भी टुटता है, शारिरिक शक्ति बढ़ती है, सारे नरवस सिस्टम को बल देता है जिससे हिस्टीरिया, कम्पन आदि रोग नहीं होने पाते।

इसकी २-२ गोली प्रातः सायं दोपहर दूध चाय या गर्म पानी से लेवें या चिकित्सक से परामर्श करें।

स्टोनोन-

मूत्राषय व गुर्दे में कई प्रकार के अप्राकृतिक आहार विहार, गंदे पानी पालक, टिमाटर आदि सब्जियों के अत्यधिक सेवन से पथरी हो जाती है, जिससे भयंकर शूल, पेशाब में जलन व रक्त आदि आते हैं। इस रोग पर बड़े अनुसंधान से यह औषध रत्न निकाला है जिसके सेवन मात्र से बिना आप्रेशन छोटे पथरी के टुकड़े मूत्र मार्ग से बाहर निकल जाते हैं। यह बड़े पत्थर को भी तोड़-तोड़ कर बाहर निकाल देता है भयंकर शूल को शान्त करता है। पेशाब की जलन को समाप्त कर मूत्र की मात्रा को बढ़ाता है। गुर्दे के दर्द में भी परम उपयोगी है।

शोधित हरड़े-

हरड़ आयुर्वेद की रसायन है, और एक दिन के बुढ़े से लेकर १०० वर्ष तक के वृद्ध के लिए अमृत है। इसका मौलिक स्वाद कसैला होता है। अतः इसे दाल चीनी, बादीयान,हींग,लवंग,सैंधा व लवण आदि औषधियों के साथ मिलाकर यह प्रयोग बनाया गया है, जो अत्यन्त स्वादिष्ट व गुणकारी है। इसको बड़े चाव से बच्चे, स्त्रीयां व बूढ़े सेवन करते हैं। इससे पुरानी

कब्ज, पेट दर्द, जी मिचलाना, उल्टी व सफर के समय चक्कर आदि आना जैसे कष्ट शान्त होते हैं। गैस, अफारा, अरुची समाप्त होती है। उदरशूल को भी शान्त करता है। भोजन के बाद एक दो हरड़े चूसने से भोजन जल्दी हजम हो जाता है, शरीर निरोग बना रहता है।

योगी अगरबत्ती-

हिमालय की उत्तम किटाणु नाशक सुगन्धित व आरोग्य पैदा करने वाली दिव्य जड़ी बूटियां और प्राकृतिक सुगन्ध द्वारा कुटीर उद्योग के रूप इसका निर्माण कराया जाता है। जो कि पूणं जलकर सात्विकता प्रदान करती है। प्रत्येक घर में पूजा पाठ आदि में इसका उपयोग करना आरोग्य दायक है।

योगी फार्मेसी की अनुभूत औषधियां:-

मुद्रक— 'महालक्ष्मी प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनर्स' गुरुद्वारा रोड, ज्वालापुर